Paper IV

Social Demography

Unit II

Topic : Herbert Spencer

हरबर्ट स्पेन्सर का प्रजननक्रियाशीलता का सिद्धान्त

(Fertility Function Theory of Herbert Spencer)

By

Dr. Syed Hasan Raza Rizvi

Dr. Archana Mishra

हरबर्ट स्पेन्सर का प्रजननक्रियाशीलता का सिद्धान्त

हरबर्ट स्पेन्सर जिन्हे उद्धविकासवादी, विचार धारा का जनक माना जाता है इन्होने समाज की विकासवादी एवं प्रगतिशील धारणाओं को अपनाते हुए जनसंख्या का प्राणोशास्त्रीय सिद्धान्त (Biological Theory of Population) प्रस्तुत किया। और इस सिद्धान्त को उन्होंने अपने लेख, The principle of Biology के अन्तर्गत Fertility function theory of population के नाम से सम्बोधित किया।

इन्होने इस सिद्धान्त के अन्तर्गत प्रजनन में वृद्धि तथा प्रजनन पर नियन्त्रण को मुख्य रूप से विकासवादी अवधारणा के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया है। इन्होने अपने सिद्धान्त में जनसंख्या के सम्बन्ध में इस तथ्य पर विशेष रूप से बल दिया है कि जिस समाज, समूह अथवा देश में व्यक्ति में अपनी उन्नति तथा विकास के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण देखे जायेंगे वहा उस समाज समूह अथवा व्यक्ति में प्रजनन की क्षमता कम होगी और वहा भी जनसंख्या नियन्त्रित रहेगी।

इसके विपरीत जो समाज दूसरे सकारात्मक प्रगतिशीलता, विकासवादी विचारधारा के सन्दर्भ में नहीं है उनमें प्रजनन की क्षमता अधिक पायी जाती है और वहा की जनसंख्या अनियमित या अधिक होती है।

स्पेन्सर ने अपने सिद्धान्त में दो तथ्यों जनसंख्या नियन्त्रण तथा अनियन्त्रण को प्रमुख आधार मापा है।

Fertility Function Theory of Population, Herbert Spencer

Individualism

(व्यक्तिकरण)

Genesis

(प्रजननशीलता या उत्पत्ति)

Natural Antagonism

(प्राकृतिक अवरोध)

स्पेन्सर के अनुसार ये दो तथ्य जिनकी हम व्याख्या निम्न प्रकार से करते है वह है –

1– व्यक्तिकरण (Individualism)

स्पन्सर ने व्यक्तिकरण का तात्पर्य मनुष्य की जीवन यापन की उस अवस्था से लिया है जिस अवस्था के अन्तर्गत मनुष्य के रहन सहन, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं मे विकास की प्रक्रिया निरन्तर बढ़ती रहती है। और वे वैज्ञानिक तकनीक के माध्यम से अपन को और अधिक विकसित करने की चेष्टा रखते है।

जिसके परिणाम स्वरुप मानसिक तथा शारीरिक कारण से उनमें प्रजनन की शक्ति कम होती जाती है। व्यक्तिकरण के आधार पर स्पेन्सर ने व्यक्तियों के रुप को तीन वर्गो में परिभाषित किया है।

Upper class (उच्च वर्ग) – इस वर्ग के अन्तर्गत मनुष्य में अपने विकसित होने विकासपूर्वक अवसर होने और संसाधनों की अधिकता होने से इस वर्ग में प्रगतिशील एवं विकासशील विचारधारा निरन्तर बनी रहती है जिसके कारण प्रजननशीलता में कमी आती है।

Lower class (निम्न वर्ग) – इस वर्ग को स्पेन्सर ने अति पिछड़ा एक निर्धन माना है जिसके अन्तर्गत संसाधनों की कमी एवं अविकसित जीवन यापन करने को बाध्य होना पडता है और इस वर्ग में स्पेन्सर के अनुसार प्रजननशील की सबसे अधिक दर पायी जाती है।

Middle class (मध्य वर्ग)– तीसरा वर्ग जिसे स्पेन्सर ने इन दोनों के मध्य का वर्ग माना है अर्थात् उस मध्य वर्ग कहते है और ये वर्ग एक तो विकास के संसाधनों की ओर निरन्तर अग्रसर रहता है तथा इसकी ओर प्रजननशील पर भी नियन्त्रण स्थापित करता है

जिसके कारण इस वर्ग में प्रजननशीलता तथा विकास की दर समान दिखाई देती है।

2. Genesis (उत्पत्ति)– स्पेन्सर ने अधिक जन्म दर तथा नियान्त्रित जन्म का मुख्य श्रेय मनुष्य को दिया है।

और वह सामान्य जन्म दर समाज में बनाये रखने मे सक्षम भी माना जाता है।

Genesis को परिभाषित करते हुए स्पेन्सर ने कहा है कि, ''मनुष्य अथवा जीवधारियों द्वारा नये सदस्यों के उत्पन्न होने को पजननशीलता के रुप में भी देखा जा सकता है।''

इनके अनुसार प्रजननशाीलता तथा व्यक्तिकरण के मध्य एक प्राकृतिक दर(Natural Rate) हमेशा विघमान रहता है।

इस प्रकार स्पेन्सर ने जनसंख्या के सम्बन्ध में अपने विकासवादी सिद्वान्त के अन्तर्गत प्रजननशाक्ति पर नियन्त्रण तथा नियन्त्रण को विकासवादी एवं प्रगतिशील वैयारिकी के रुप में प्रस्तुत किया है।

Reference Books:

1– जनांकिकी के सिद्वान्त by वी.सी .सिन्हा , पुष्पा सिन्हा

2– जनांकिकी by डी.एस वघेल, किरण बघेल